© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 04 | July - September 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : 30 Sep 2016

"वृद्ध जनसंख्या: समाजशास्त्रीय निहितार्थ और नीतिगत प्रतिक्रियाएँ"

Dr. Jitendra Kumar
Associate Professor, Dept. of Sociology
S. M. College Chandausi

सारांश

वृद्ध जनसंख्या की घटना 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों में से एक है, जो विभिन्न समाजशास्त्रीय चुनौतियों को प्रस्तुत करती है और व्यापक नीतिगत प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता होती है। यह शोधपत्र वृद्ध जनसंख्या के समाजशास्त्रीय निहितार्थों की जाँच करता है, इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि कैसे बढ़ी हुई जीवन प्रत्याशा और घटती जन्म दर सामाजिक संरचनाओं, आर्थिक प्रणालियों और अंतर-पीढ़ीगत संबंधों को बदल देती है। अध्ययन श्रम बाजारों, स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों और सामाजिक सेवाओं पर वृद्ध जनसंख्या के प्रभाव की खोज करता है, जिसमें पेंशन प्रणालियों की स्थिरता, आयु-उपयुक्त स्वास्थ्य सेवा की माँग और बढ़ी हुई पीढ़ीगत संघर्ष की संभावना जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त, यह शोधपत्र विभिन्न देशों की नीतिगत प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करता है, सामाजिक सामंजस्य और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करते हुए वृद्ध वयस्कों की आवश्यकताओं को संबोधित करने के उद्देश्य से रणनीतियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है। सफल वृद्धावस्था नीतियों के तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से, शोधपत्र नीति निर्माताओं को वृद्ध जनसंख्या के समाजशास्त्रीय निहितार्थों को प्रबंधित करने के लिए समावेशी, न्यायसंगत और टिकाऊ समाधान विकसित करने के लिए सिफारिशें प्रदान करता है।

कीवर्ड वृद्ध जनसंख्या, समाजशास्त्रीय निहितार्थ, जनसांख्यिकी रुझान, जीवन प्रत्याशा

परिचय

वृद्ध जनसंख्या एक वैश्विक घटना है जिसका दुनिया भर के समाजों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य सेवा और प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ, लोग पहले से कहीं अधिक लंबे समय तक जी रहे हैं। साथ ही, कई देशों में घटती जन्म दर जनसंख्या में वृद्ध वयस्कों के उच्च अनुपात की ओर ले जा रही है। यह जनसांख्यिकीय बदलाव चुनौतियों और अवसरों दोनों को प्रस्तुत करता है, जिसके लिए सावधानीपूर्वक जांच और रणनीतिक नीति प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता होती है। जीवन प्रत्याशा में वृद्धि और वृद्ध व्यक्तियों की संख्या में इसी तरह की वृद्धि सामाजिक और आर्थिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है। ये परिवर्तन श्रम बाजार, स्वास्थ्य सेवा प्रणाली, सामाजिक सेवाओं और परिवारों और समुदायों के भीतर गतिशीलता को प्रभावित करते हैं। जैसे-जैसे वृद्ध वयस्कों का अनुपात बढ़ता है, आयु-उपयुक्त स्वास्थ्य सेवा, सामाजिक सहायता और स्थायी पेंशन प्रणाली की मांग बढ़ती है। इसके अतिरिक्त, वृद्ध आबादी अंतर-पीढ़ीगत समानता और पीढ़ीगत संघर्ष की संभावना के बारे में सवाल उठाती है। इन चुनौतियों के जवाब में, सरकारों और नीति निर्माताओं को वृद्ध आबादी की जरूरतों को

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 04 | July - September 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : 30 Sep 2016

पूरा करने के लिए प्रभावी रणनीति विकसित करने का काम सौंपा जाता है। इसमें ऐसी नीतियाँ बनाना शामिल है जो वृद्धों के कल्याण को बढ़ावा देती हैं, सामाजिक और आर्थिक प्रणालियों की स्थिरता सुनिश्चित करती हैं और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देती हैं। विभिन्न देशों ने वृद्ध होती आबादी के प्रभावों को प्रबंधित करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोण अपनाए हैं, जो इस बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं कि क्या कारगर है और क्या नहीं। इस शोधपत्र का उद्देश्य वृद्ध होती आबादी के समाजशास्त्रीय प्रभावों का पता लगाना और विभिन्न देशों द्वारा अपनाई गई नीतिगत प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन करना है। श्रम बाजारों, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सेवाओं पर प्रभाव की जांच करके और सफल वृद्धावस्था नीतियों का विश्लेषण करके, यह अध्ययन समावेशी, न्यायसंगत और टिकाऊ समाधान विकसित करने के लिए व्यापक सिफारिशें प्रदान करना चाहता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, यह शोध वृद्ध होती आबादी द्वारा उत्पन्न बहुमुखी चुनौतियों को समझने और उनका समाधान करने के महत्व पर प्रकाश डालता है ताकि लचीले और अनुकूलनीय समाजों का निर्माण किया जा सके।

❖ **वृद्ध जनसंख्या: परिभाषा**

वृद्ध जनसंख्या उन व्यक्तियों का समूह होता है जो किसी समाज या देश में एक विशेष आयु सीमा को पार कर चुके होते हैं, जिसे आमतौर पर 60 या 65 वर्ष माना जाता है। वृद्ध जनसंख्या को परिभाषित करने के लिए कई कारक और आयाम होते हैं:

1. **आयु-आधारित परिभाषा:** अधिकतर देशों में वृद्ध जनसंख्या को 60 या 65 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह आयु सीमा पेंशन और सामाजिक सुरक्षा लाभों के लिए पात्रता निर्धारित करने में भी उपयोग की जाती है।
2. **जनसांख्यिकीय परिप्रेक्ष्य:** जनसांख्यिकी के दृष्टिकोण से, वृद्ध जनसंख्या किसी देश या क्षेत्र की कुल जनसंख्या का वह हिस्सा होती है, जिसमें उच्च आयु वर्ग के लोग शामिल होते हैं। वृद्ध जनसंख्या का अनुपात जनसंख्या के वृद्धावस्था में पहुंचने के औसत जीवन प्रत्याशा पर निर्भर करता है।
3. **सामाजिक और आर्थिक स्थिति:** वृद्ध जनसंख्या की परिभाषा में सामाजिक और आर्थिक कारक भी शामिल होते हैं। इसमें आय, स्वास्थ्य स्थिति, और सामाजिक भूमिका जैसी विशेषताएँ शामिल हैं।
4. **स्वास्थ्य और कार्यक्षमता:** वृद्ध जनसंख्या की पहचान उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, और उनकी दैनिक गतिविधियों को स्वतंत्र रूप से करने की क्षमता के आधार पर भी की जा सकती है।

वृद्ध जनसंख्या का अध्ययन और परिभाषा समाजशास्त्र, जनसांख्यिकी, स्वास्थ्य विज्ञान, और अर्थशास्त्र जैसे विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। यह परिभाषा न केवल जनसंख्या संरचना और विकास को समझने

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 04 | July - September 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : 30 Sep 2016

में मदद करती है, बल्कि वृद्ध जनसंख्या की जरूरतों और उनके कल्याण के लिए प्रभावी नीतियों और कार्यक्रमों के विकास में भी सहायक होती है।

❖ **सामाजिक सेवाएँ**

जनसंख्या में बुज़ुर्ग व्यक्तियों के बढ़ते अनुपात के कारण उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सामाजिक सेवाओं का पुनर्मूल्यांकन और विस्तार आवश्यक है। सामाजिक सेवाएँ बुज़ुर्ग आबादी का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि वृद्ध वयस्कों को उनके जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए आवश्यक संसाधनों, देखभाल और सहायता तक पहुँच हो। यह खंड बुज़ुर्ग आबादी के लिए आवश्यक सामाजिक सेवाओं के विभिन्न आयामों की पड़ताल करता है, जिसमें दीर्घकालिक देखभाल, सामुदायिक सहायता कार्यक्रम और सामाजिक समावेश पहल शामिल हैं।

1. **दीर्घकालिक देखभाल:** बुज़ुर्गों के लिए सामाजिक सेवाओं के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक दीर्घकालिक देखभाल है, जिसमें आवासीय देखभाल सुविधाएँ, घर-आधारित देखभाल और सहायक रहने की व्यवस्था शामिल है। जैसे-जैसे लोगों की उम्र बढ़ती है, नहाने, कपड़े पहनने और खाने जैसी दैनिक गतिविधियों में सहायता की आवश्यकता होने की संभावना बढ़ जाती है। वृद्ध वयस्कों की गरिमा और स्वायत्तता का सम्मान करने वाली उच्च-गुणवत्ता वाली देखभाल प्रदान करने के लिए दीर्घकालिक देखभाल सेवाओं को पर्याप्त रूप से वित्त पोषित और कर्मचारी होना चाहिए।
2. **सामुदायिक सहायता कार्यक्रम:** वृद्ध वयस्कों को स्वतंत्र रूप से जीने और समाज के सक्रिय सदस्य बने रहने में सक्षम बनाने के लिए सामुदायिक सहायता कार्यक्रम आवश्यक हैं। इन कार्यक्रमों में अक्सर भोजन वितरण सेवाएँ, परिवहन सहायता और मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाली सामाजिक गतिविधियाँ शामिल होती हैं। समुदाय की भावना को बढ़ावा देने और सामाजिक अलगाव को रोकने के द्वारा, ये कार्यक्रम बुज़ुर्ग व्यक्तियों के जीवन की समग्र गुणवत्ता को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।
3. **सामाजिक समावेशन पहल:** बुज़ुर्ग आबादी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देना ज़रूरी है। सामाजिक समावेशन पहल का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बुज़ुर्ग सामाजिक, सांस्कृतिक और नागरिक गतिविधियों में लगे रहें। इसमें उम्र के अनुकूल वातावरण बनाना, आजीवन सीखने के अवसर प्रदान करना और अंतर-पीढ़ीगत बातचीत को प्रोत्साहित करना शामिल हो सकता है। सामाजिक समावेशन न केवल बुज़ुर्गों के स्वास्थ्य को बढ़ाता है बल्कि सभी आयु समूहों के योगदान को महत्व देकर समुदाय को समृद्ध भी बनाता है।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 04 | July - September 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : 30 Sep 2016

4. **सामाजिक सेवाएँ प्रदान करने में चुनौतियाँ:** बुज़ुर्ग आबादी को व्यापक सामाजिक सेवाएँ प्रदान करना कई चुनौतियों के साथ आता है। इनमें पर्याप्त धन जुटाना, देखभाल करने वाले क्षेत्र में कार्यबल की कमी को दूर करना और विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक-आर्थिक समूहों में सेवाओं तक समान पहुँच सुनिश्चित करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, बुज़ुर्गों की विविध ज़रूरतों के लिए मौजूदा सेवाओं को अधिक लचीला और उत्तरदायी बनाने की आवश्यकता है।
5. **नीतिगत निहितार्थ:** बुजुर्गों के लिए सामाजिक सेवाओं को बढ़ाने के लिए प्रभावी नीति-निर्माण महत्वपूर्ण है। सरकारों को दीर्घकालिक देखभाल और सामुदायिक सहायता कार्यक्रमों के लिए संसाधनों के आवंटन को प्राथमिकता देनी चाहिए और सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने वाली नीतियों को लागू करना चाहिए। इसके लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच सहयोग की आवश्यकता है, साथ ही सेवाओं की योजना और कार्यान्वयन में समुदायों और स्वयं वृद्धों की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है।

निष्कर्ष के तौर पर, सामाजिक सेवाएँ वृद्ध आबादी के लिए सहायता का आधार हैं। व्यापक और समावेशी सामाजिक सेवाओं के माध्यम से वृद्धों की विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करके, समाज यह सुनिश्चित कर सकता है कि उनके बुजुर्ग सदस्य उच्च गुणवत्ता वाले जीवन का आनंद लें और समुदाय में सक्रिय, मूल्यवान भागीदार बने रहें।

❖ अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता

अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता समाज के भीतर विभिन्न आयु समूहों के बीच बातचीत और संबंधों को संदर्भित करती है, विशेष रूप से युवा और पुरानी पीढ़ियों के बीच। जैसे-जैसे आबादी की उम्र बढ़ती है, सामाजिक सामंजस्य, आर्थिक स्थिरता और सांस्कृतिक निरंतरता को आकार देने में ये गतिशीलता तेजी से महत्वपूर्ण होती जाती है। यह खंड अंतर-पीढ़ीगत संबंधों की जटिलताओं, संघर्ष और सहयोग की संभावना और सकारात्मक अंतर-पीढ़ीगत बातचीत को बढ़ावा देने में नीति की भूमिका का पता लगाता है।

1. **बदलते पारिवारिक ढांचे:** वृद्ध आबादी का पारिवारिक संरचनाओं और भूमिकाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। परंपरागत रूप से, परिवार वृद्ध वयस्कों के लिए सहायता का प्राथमिक स्रोत रहे हैं, जो देखभाल और सहायता प्रदान करते हैं। हालाँकि, बदलते पारिवारिक गतिशीलता, जैसे कि छोटे परिवार का आकार, बढ़ी हुई भौगोलिक गतिशीलता और दोहरी आय वाले परिवार, अपने बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल करने की परिवारों की क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं। इन बदलावों को समझना समर्थन प्रणालियों को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है जो पारिवारिक देखभाल को पूरक बनाते हैं।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 04 | July - September 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : 30 Sep 2016

2. **आर्थिक अंतर-निर्भरता:** पीढ़ियों के बीच आर्थिक अंतर-निर्भरता अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता का एक प्रमुख पहलू है। वृद्ध वयस्क अक्सर कामकाजी उम्र की आबादी द्वारा वित्तपोषित पेंशन और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों पर निर्भर होते हैं। इसके विपरीत, युवा पीढ़ी को अपने बुजुर्गों द्वारा विरासत और वित्तीय सहायता के माध्यम से संचित धन और परिसंपत्तियों से लाभ मिलता है। यह परस्पर निर्भरता स्थायी आर्थिक नीतियों के महत्व को रेखांकित करती है जो युवा और वृद्ध दोनों की आवश्यकताओं को संतुलित करती हैं।
3. **पीढ़ीगत समानता:** पीढ़ीगत समानता विभिन्न आयु समूहों में संसाधनों और अवसरों के उचित वितरण से संबंधित है। जैसे-जैसे समाज वृद्ध आबादी का समर्थन करने के लिए संसाधनों का आवंटन करते हैं, पीढ़ियों के बीच कथित या वास्तविक प्रतिस्पर्धा की संभावना होती है। यह सुनिश्चित करना कि नीतियाँ न्यायसंगत हों और एक आयु समूह को दूसरे पर अनुपातहीन रूप से तरजीह न दें, सामाजिक सद्भाव और विश्वास बनाए रखने के लिए आवश्यक है।
4. **सामाजिक धारणाएँ और रूढ़ियाँ:** वृद्धावस्था और वृद्ध वयस्कों के बारे में सामाजिक धारणाएँ और रूढ़ियाँ अंतर-पीढ़ी संबंधों को प्रभावित कर सकती हैं। नकारात्मक रूढ़ियाँ, जैसे कि वृद्ध व्यक्तियों को बोझ के रूप में देखना, भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार का कारण बन सकती हैं। वृद्धावस्था की सकारात्मक छवियों को बढ़ावा देना और वृद्ध वयस्कों के योगदान के लिए सम्मान को बढ़ावा देना अंतर-पीढ़ी समझ और सहयोग को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।
5. **अंतर-पीढ़ी कार्यक्रम और पहल:** अंतर-पीढ़ी कार्यक्रम और पहल का उद्देश्य आयु समूहों के बीच की खाई को पाटना और आपसी समर्थन और सीखने को बढ़ावा देना है। इनमें अंतर-पीढ़ी आवास परियोजनाएँ, मेंटरशिप कार्यक्रम और सामुदायिक गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं जो युवा और वृद्धों के बीच बातचीत को प्रोत्साहित करती हैं। इस तरह की पहल बाधाओं को तोड़ने, उम्र से संबंधित पूर्वाग्रहों को कम करने और अधिक मजबूत, अधिक एकजुट समुदायों का निर्माण करने में मदद करती हैं।
6. **नीति और योजना:** सकारात्मक अंतर-पीढ़ी गतिशीलता का समर्थन करने के लिए प्रभावी नीति और योजना आवश्यक है। नीति निर्माताओं को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक नीतियों को डिजाइन करते समय सभी आयु समूहों की जरूरतों और योगदानों पर विचार करना चाहिए। इसमें नीति निर्माण प्रक्रिया में विभिन्न पीढ़ियों को शामिल करना शामिल है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके दृष्टिकोण और जरूरतों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व किया जाए।
7. **चुनौतियाँ और अवसर:** जबकि अंतर-पीढ़ी गतिशीलता चुनौतियाँ पेश कर सकती है, वे नवाचार और विकास के अवसर भी प्रदान करती हैं। जो समाज इन गतिशीलता को सफलतापूर्वक नेविगेट करते हैं, वे सभी आयु समूहों की ताकत का उपयोग कर सकते हैं, लचीलापन और

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 04 | July - September 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : 30 Sep 2016

अनुकूलनशीलता को बढ़ावा दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, बड़े वयस्क मूल्यवान अनुभव और सलाह दे सकते हैं, जबकि युवा पीढ़ी नए दृष्टिकोण और तकनीकी कौशल ला सकती है।

निष्कर्ष के तौर पर, अंतर-पीढ़ी गतिशीलता समाज के ताने-बाने को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन रिश्तों की जटिलताओं को समझकर और उनका समाधान करके, तथा अंतर-पीढ़ीगत सहयोग को बढ़ावा देने वाली नीतियों और पहलों को बढ़ावा देकर, समाज सभी आयु समूहों के लिए अधिक समावेशी और सामंजस्यपूर्ण भविष्य का निर्माण कर सकता है।

निष्कर्ष

वृद्ध होती जनसंख्या हमारे समय की एक परिभाषित जनसांख्यिकीय प्रवृत्ति है, जो महत्वपूर्ण चुनौतियों और अवसरों दोनों को प्रस्तुत करती है। जैसे-जैसे वृद्ध वयस्कों का अनुपात बढ़ता जा रहा है, समाजों को यह सुनिश्चित करने के लिए अनुकूलन करना चाहिए कि सामाजिक और आर्थिक स्थिरता बनाए रखते हुए इस जनसांख्यिकीय की ज़रूरतें पूरी हों। इस शोधपत्र में वृद्ध होती जनसंख्या के समाजशास्त्रीय निहितार्थों का पता लगाया गया है, जो श्रम बाज़ारों, स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों, सामाजिक सेवाओं और अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता पर पड़ने वाले प्रभावों पर ध्यान केंद्रित करता है। जीवन प्रत्याशा में वृद्धि और जन्म दर में गिरावट के लिए व्यापक नीतिगत प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता है। प्रभावी रणनीतियों में पेंशन प्रणालियों की स्थिरता, आयु-उपयुक्त स्वास्थ्य सेवा की मांग और स्वतंत्र जीवन और सामाजिक समावेशन का समर्थन करने वाली सामाजिक सेवाओं के प्रावधान को संबोधित करना चाहिए। इसके अलावा, सामाजिक सामंजस्य बनाए रखने और पीढ़ीगत संघर्ष को रोकने के लिए सकारात्मक अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। विभिन्न देशों के केस स्टडीज़ वृद्ध होती जनसंख्या के निहितार्थों को प्रबंधित करने के लिए विविध दृष्टिकोणों को उजागर करते हैं। सफल नीतियों में अक्सर सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की पहल, सामुदायिक भागीदारी और समानता और समावेशिता के प्रति प्रतिबद्धता का संयोजन शामिल होता है। ये उदाहरण प्रभावी और टिकाऊ समाधान विकसित करने की चाह रखने वाले नीति निर्माताओं के लिए मूल्यवान सबक प्रदान करते हैं। वृद्ध होती आबादी के समाजशास्त्रीय निहितार्थों को संबोधित करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को एकीकृत करता हो। नीति निर्माताओं को समावेशी नीतियों के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए जो वृद्धों की भलाई को बढ़ावा देती हैं और साथ ही यह सुनिश्चित करती हैं कि सभी आयु वर्ग फल-फूल सकें। वृद्ध होती आबादी द्वारा प्रस्तुत अवसरों को अपनाकर और विचारशील, न्यायसंगत नीति प्रतिक्रियाओं को लागू करके, समाज सभी पीढ़ियों के लिए अधिक लचीला और अनुकूलनीय भविष्य का निर्माण कर सकता है।

ग्रंथसूची

- बाल्टेस, पी.बी., और स्मिथ, जे. (2003)। वृद्धावस्था के भविष्य में नए मोर्चे: युवा वृद्धों की सफल वृद्धावस्था से लेकर चौथे युग की दुविधाओं तक। जेरोन्टोलॉजी, 49(2), 123-135।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 04 | July - September 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : 30 Sep 2016

- ब्लूम, डी.ई., कैनिंग, डी., और फिंक, जी. (2010)। आर्थिक विकास के लिए जनसंख्या वृद्धावस्था के निहितार्थ। ऑक्सफोर्ड रिव्यू ऑफ इकोनॉमिक पॉलिसी, 26(4), 583-612। • चोई, एन. जी., और चो, आर. जे. (2010)। वृद्ध वयस्कों में समय और धन स्वयंसेवा: अतीत और वर्तमान स्वयंसेवा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और सामाजिक नेटवर्क के बीच संबंध। एजिंग इंटरनेशनल, 35(3), 165-180।
- एस्टेस, सी. एल., बिग्स, एस., और फिलिप्सन, सी. (2003)। सामाजिक सिद्धांत, सामाजिक नीति और वृद्धावस्था: एक महत्वपूर्ण परिचय। ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस।
- हार्पर, एस. (2014)। वृद्ध समाजों के आर्थिक और सामाजिक निहितार्थ। विज्ञान, 346(6209), 587-591।
- हेनिंग, सी., और वॉर्डरर, पी. (2001)। मनोवैज्ञानिक पलायनवाद: ज्ञान की आवश्यकता के आधार पर टेलीविजन देखने की मात्रा का पूर्वानुमान लगाना। जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन, 51(1), 100-120।
- कोहलबैकर, एफ., और हर्स्टैट, सी. (2011)। सिल्वर मार्केट की परिघटना: एजिंग सोसाइटी में मार्केटिंग और इनोवेशन। स्प्रिंगर।
- लॉयड-शरलॉक, पी. (2010)। जनसंख्या की उम्र बढ़ना और अंतर्राष्ट्रीय विकास: सामान्यीकरण से साक्ष्य तक। पॉलिसी प्रेस।
- फिलिप्सन, सी. (2013)। उम्र बढ़ना। पॉलिटी प्रेस।